

DPN 5947

Title : अष्टवर्ग दृष्टाफल व द्वादश स्वर प्रश्न
ASTA VARSA

Run. No. 6638

Cat. No.

Micro. No.

Subject ज्योतिष Astrology

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 25.9 x 9.5 Folios 12 Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्र दत्त वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Phanindra Datta Vajracarya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

0 cms.

5

10

15

20

५१.

ज्योतिष सप्त

फरीन्द्गत वज्राचार्य

शुक्रया अंतरदशा ॥

शु र चं मं रा वृ श बु के

२ ० १ ० २ १ २ १ ०

२ ८ १ २ ० २ १ १ ० २

२० ० १० १० १० १० २० १०

नृपेयु मानो धनरा भूपुरो हस्तस्य

शुक्रं प्रमदा नुरक्ता । मत्रे प्रमेयो निपु

नश्च शास्त्रे कवे ईशायां कुशली मनुष्यं

१ शुक्रपक्ष अग्नि ॥ ॥ तिथिवारनक्षत्रं च अष्टादश

समन्वितं । सप्तादिपावलिमिश्रा अग्निना भागमा

हरेत् ॥ ॥ एकाशेषे च स्वर्गस्थे द्विशेषे च रसात

लोत्त शेषे च भूतमर्त्त अग्निप्रचरने सदा ॥ स्वर्गेऽग्नि

श्च महोत्पातं पाताले हानिमेव च । समृद्धिमत्यलो

के च सर्वकामानि सिद्धिदा ॥ ॥ सैकान्तिथिवा

रयुताः । कृता प्रशेषे गुणैः प्रभूमिवद्भि वासः ॥

रसौख्याय होमशशियुग्मशेषे । पारार्थनाशो दिवि भूतले च ॥ ॥ कृपां हिनंतने ॥ धनलि

तिनंतने ॥ धनलि वारनंतने ॥ पितृभागयाय ॥ द्विशेषया ॥ स्वर्गत अग्नि ॥ नसे शेषया ॥

पाताल अग्नि ॥ स्वऽपि ४ शेषया भूमिस अग्नि ॥ ॥ ध्वते अग्नि स्वय रुक्मपक्षया ॥ ॥ ॥

नवधाऽजज्ञता ॥ अग्नियाजि क्ता स्वया ॥ आदित्यनभोगया ककुलिनिसे ॥ कथनं ग्रहपतिं

नक्षत्रवो यावत् स्वय ग्रहपतिं तय जुलो ॥ गुरु ॥ आ ॥ शु ॥ बु ॥ श ॥ चं ॥ मं ॥ वृ ॥ रा ॥ के ॥ आदिभो

गनिसे पूजायादि न कृक्या नक्षत्र ॥ ॥ वीय ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ शुभगुरु

याकेला तसा शुभ ॥ पापग्रहयाकेला तसा अशुभ ॥ अग्नियाजि क्ता भिं शुमाल ॥ ॥ ॥

१ नमः श्रीसूर्याय ॥ ॥ सूर्यभोगनवोया ॥ ॥ शीलऽध्वते सलात शोक संताप ॥ वक्ते १ राभ पू

जा ॥ कलस ६ अर्थायुनाश ॥ कणे १ रिपुपीडा ॥ उदरे ७ भयपीडा ॥ गुह्ये ५ सौख्या ॥ पाद २ गमनं

धतेसूर्यभोगनखयजुलो॥ ॥चन्द्रभोगनवोय॥ ॥शील३दुःखपीडा॥कर्ण४शत्रु
 वन्ध॥नेत्र२लाभपूजा॥घ्राण२वन्धन॥वक्त्रे१भोजनहानि॥करे४लाभपूजा॥कण्ठे१कार्य
 सिद्धि॥उदरे३भयपीडा॥सिस्त्रे३धान्यपाप॥पादे४भयदुःख॥धतेचन्द्रमायामोगनख
 य॥ ॥अंगारयाभोगनवोय॥पा२हरगमन॥जानु२मुखजुयु॥कनि३स्त्रीलाभ॥पृ
 ष्ठे३विनाशजुयु॥नाभि१क्षयहानि॥हृदये१कलह॥पार्श्वे२रोगीजुयु॥कर२पीतिजुयु॥
 भुज२दण्डहानि॥कर्ण२अर्थनाश॥कण्ठे१लाभ॥वक्त्रे१क्षम॥घ्राणे१लाभ॥नेत्रे२पुत्र
 लाभ॥शीले२राजपीडा॥धतेमंगलयाफल॥ ॥बुधयाभोगनवोय॥हृदये२ना
 नाविंता॥करे३भुभजुयु॥पादे६वन्धन॥वामहस्ते३भयदयु॥उदरे६अर्थहानि॥ ॥

श्रोत्र२धनलाभ॥नेत्रे२शुभ॥वक्त्रे१जययाकोसिद्धि॥शील२मत्पु॥धतेबुधयाफल
 ॥ ॥रुहस्पतियाभोगनखय॥नेत्रे२दुःखिजुयु॥शील५मुखीजुयु॥वक्त्रे२धन
 हानि॥पार्श्वे२कलह॥घ्राणे२अन्नलाभ॥भुजे४राजभय॥वामभुजे४लाभ॥उदरे२
 आयस॥लिंगे२सौभाग्य॥पादे२अश्वानपीडा॥पुस्तकसंपत्ति॥अक्षमाला॥महादुःख॥
 धतेरुहस्पतियाफल॥ ॥शुक्रयाभोगनवोय॥शील६पुत्रलाभ॥वक्त्रे५सौभा
 ग्य॥वाङ्म२वन्धन॥उदरे३मरणां॥सिस्त्रे२जय॥कण्ठे३अन्नलाभ॥चरणे२भयदयु
 नाभि१वन्धन॥हस्ते३भुभजुयु॥धनेशुक्रयाफल॥ ॥शनिश्वरभोगनवोय
 ॥मुखे१नानादुःखवन्धन॥दक्षिणहस्ते४हानिभय॥पादे६स्थानभंगदेशपीडा॥वाम

हस्ते ४ राजभय ॥ विपत्ति ॥ हृदये ५ जयराभ पूजा ॥ नेत्रे २ परमर्षीति ॥ शीले ३ पुरुष या
सुख ॥ शत्रुनाश ॥ राज्यलाभ ॥ मिसाया जुलसा ॥ पुरुषमृत्यु ॥ गुह्ये २ भय ॥ थान भंग ॥ ध्वने
शनिश्चरया फल ॥ ॥ शुभं ॥ ॥ मेघेश नौ गुर्जलेषु ॥ पवासे च त्रुपदेष्टु ॥
मिथुने च महा माया ॥ स्थली मूले स्थलेषु च ॥ कर्कटे काश्मिर के बोधा ॥ शक्र पक्षे मृगाधि
पे ॥ शनिश्चरे कन्याया च मालवा या निसंक्षयं ॥ तुलाया दृष्टिक वापेषु ॥ यदा यांति शनिश्च
रा ॥ न वर्षति तदा मेघा ॥ पृथ्वी दुर्भिक्षपीडना ॥ सुभिक्षं मकरे कुंभे जायते व ऊषाशनौ ॥
माने च सर्वलोकानां दुर्भिक्षे न क्षयो भवेत् ॥ ॥ राहुया भोगन वीय ॥ अरवत न
वीय ॥ वामगति ॥ वक्त्रे १ मरणां ॥ घ्राणे २ अर्थलाभ ॥ नेत्रे २ मित्रलाभ ॥ नाशाय २ संप

दा ॥ शिले पराजे भंग ॥ भुजे २ शत्रुनाश ॥ कर्णे २ मित्रलाभ ॥ डण्डे २ परिभव ॥ करे २ सुख ॥
जिह्वा ५ सुख संपद ॥ दर्शणे २ प्रीति दयु ॥ ध्वने राहुया फल ॥ ॥ केतुया भोगन वीय ॥
कर्ण ६ मरणां ॥ हस्ते पलाभ दयु ॥ पाद ४ वध्न ॥ कुक्षु ३ रोग ॥ नेत्रे २ आरोग्य ॥ शीले ३ सुख जु
यु ॥ मुख २ पीडा जुयु ॥ कर्णा २ समान ॥ ध्वने केतुया भोगन वामगति वीय ॥ जुले ॥ ॥ शुभं
१ उदये राज्यलाभाय ॥ वक्त्रे देशांतर गता ॥ मार्गे अरिष्ट कर्त्रा च ॥ अष्टे मानार्थ नाशनं ॥ ॥
ध्वने गुह्या भाव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ शनिधिवारं च नक्षत्रं नाम भक्षर संयुतं ॥ नवमिस्तु
हरे भागं शेषको वाहन उच्यते ॥ गदयो वाजिन दंति ॥ मेष जम्बूक के शरि ॥ काक मयूर हंसा ॥
॥ ॥ गदाहा ॥ मभिं ॥ सल मध्यम ॥ किसिया लाभा ॥ पैया नय दयि ॥ ध्वनया भंग ॥ सिंहया

जितय जुयु ॥ कोखया कस्त जुयु ॥ होसखाया भिंग राजहंसयाभिं ॥ श्वते वाहन स्वय जुलो ॥
 ॥ १ ॥ गन्य भुंशोऽग्निदाहो गहपुनगरा मगोष्टे पुंशात र्ना रोगांगघाते क्षनति
 थो पुत्र कान्ता वियोगः चेत्स्यात् मोहोरिभी कशतनु रि कांशंकटाया विरोधान् ॥ मृत्यु
 जन्म कराक कथमपि विहिता शंकटा योगिनीया ॥ शुभं ॥ नगल मर्हिं मिपुथ्ये प्रदेशवने
 मं मतिमभिं मचा मां वडु वाय मालि ॥ ० ॥ धनु कन्यामीन पीत ॥ वृष कर्कट तुला
 शीत ॥ सिंह नेष विह्व के रक्त ॥ मकर कुंभ मिथुं कर्क ॥ श्वते चन्द्र वरा ॥ ॥ स्वेत चन्द्र भवे
 लाभं पीत चन्द्र शुभा शुभ ॥ रक्त चन्द्र भवे युद्धं कर्म चन्द्र मृत्यु संशय ॥ ॥ श्वते चन्द्र या फल ॥

संक्रांति सत्रि कुं य हुं न नायाय ॥
 वार्ते नाक लास्य ॥

र वार्या तिथि १५ मास १२ दसा १० ४८ वेदा ४ संक्रांति तोर्जाः तदिन श्वयो ह्याग्र है विम
 क्ताय दिपंच कस्या रोगस्त दग्नि नप चौर मृत्युः ॥ ॥ तिथि १५ मास १२ दश १० अष्ट ८
 वेद ४ थि कि संक्रांति वंगु हुं ताने ॥ गुनं २ भागया तापति ॥ थाने ५ वाकि जुलसा ॥ रोग
 वान् ॥ नेता गुलि ५ वाकि जुलसा ॥ अग्नि वान् ॥ दधु गुलि ५ वाकि जुलसा नप वान् ॥ पेता गु
 लि ५ वाकि जुलसा चौर वान् ॥ शता गुलि कोने ५ वाकि जुलसा मृत्यु वान् ॥ थुगु भेदन स्व
 य जुलो ॥ ॥ अग्नि वान स हे ज्ञायाय मते व ॥ राज वान स ग्वाथ दय के मते व ॥ चौर वान
 स चाकरि वोने मते व ॥ मृत्यु वान स विवाह मते व ॥ रोग वान स वासल कार्य मते व ॥ ॥
 वान या प्रमान संक्रांति वंगुया हि हुतो नाक मभिं ॥ थुलि विशेषः ॥ ॥ शुभम्

१ मेष. सिंह. वृष. मकर ॥ स्वर्गति ॥ ॥ मिथुन तुला. धनु. कन्या. नागा ॥ पाताले ॥ ॥ कुंभ. मी
 न. विष्णु. अरि. के. रारि ॥ मध्ये ॥ ॥ स्वर्गतिषु शुभफलं कार्यं ॥ पातालेषु धनागम ॥ मृत्यु. लो
 के वसन्ते भडा. हानि मृत्युश्च जायते ॥ ॥ स्वर्गति चोंगु विस्तिया को ज्ञा सिधु ॥ पाताले. चो
 गु. धं. डहा वयु ॥ भूमी चो गु. विस्ति. हानि ॥ ॥ ॥ रवि भूमि वसन्ते भडा. सोम भडाश्च काष्ठ मे
 भौमे तु भन्न मध्ये तु. वृधे तु नगरेषु च. गुरु भडा गृहे मध्ये. शुक्र भडा वसागरे. शनि भडा त.
 पंथा. सप्त भडा विचारणा ॥ ॥ श्वते सप्त भडा विचारया यगु प्रमारा चो सेतया ॥ ॥ ॥
 र आदित्य वना पचो को गृह ॥ अश्व ॥ शत्रु गृहे सचो को गृहा को पंचो न ॥ सम गृहे सचो को गृहा देवो न ॥ मि
 श्र चन्द्र. शुक्र. स्त्री गृह ॥ वृधरा ऊ. केतु. न पुंशक ॥ आदित्य. मंगल. शनि श्वर. वृहस्पति. पुरुष गृह ॥ ॥

गुरु सचो को गृह ॥ वलवान् ॥
 श्वते गृह भाव ॥

१ पुरुष गृह तो वाचा ॥ वाचा स्त्री गृह तो स्त्रियः ॥ न पुंशक गृहे रोगी निकटे च न पुंशक ॥ ॥ पुरुष गृह
 चो न सा. पुरुष रक्षा जुयी ॥ स्त्री गृह चो न सा. स्त्री रक्षा जुयी ॥ न पुंशक गृह चो न सा. रोगी या रोग संक
 ष्ट जुयी वा ॥ ॥ चल गृहे जुया निव. अष्टम सं चल गृह चो निव. थीर लग्न जुया वचो ड. ना सध्व रोगी या
 र मिसा जन. जेष्ट नक्षत्र जुलसा. मिजन क्रापा मृत्यु ॥ अथ वा. कंगाल जुयी ॥ मिजन थं जुलसा. जेष्ट
 नक्षत्र जुलसां. तेव ॥ ॥ ॥ प्रथम पहल स. सूर्य मं एडल दतसा. पूर्व दक्षिणा स रोग जुयी ॥ ॥
 वाकि जा व वे ल स. सूर्य मं एडल दतसा. वागायी व ॥ स्वपहल स. जुलसा. कुव भंग फल ॥ ॥ ॥

कुनं लानि

अ	आ	ॐ
ॐ	उ	उ
इ	ए	उ
अ	अ	अ

१ स्वराया प्रसन्न फल विचार लाय ॥ चक्र सिधय कं स्वर द्वादशाक्षरत ॥ न पुंशक
 टोलते ॥ ॥ थथे चक्र चो यधुन कं ॥ लिपत स. पूजा या यगाल. चित्त स्वा न धूप।

थदधिथिद्वत्त्वापुजयुव॥ ताकालदतनास. लाभदयी. ल्वानास्मद्वंसिले जुयी॥ ॥ ॐ
कारया॥ नित्यं भयजायलपीव॥ ॥ अंकारया॥ तत्कारनं. इष्टमित्रव. प्रीतिजुयि. का
र्जसिद्ध॥ ॥ अ४कारया॥ लसद्वलेफलदयु. ताकालसं. धनलाभदयीव॥ ॥
इति. द्वादशस्वरपुस्तसमाप्ता॥ ॥ ॐ ॥ ॥ १॥ थद्वलनं. थद्वगुणसिं. षष्ठ६ भष्ट८ कारश॥ २॥ थगुलन.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नानाधातुरत्नराभयाकोज्यासिद्धः ॥ मृकारया ॥ ज्ञानपुत्रधनपुत्रयाक्कज्याभंगविश्वः ॥
 ७कारया ॥ भयसंतापनित्यंकलहः ॥ ८कारया ॥ शोकसतापवृत्तेश्विरोधमत्पुत्रभया ॥ ए
 कारया ॥ धनविधिभिन्नद्विभिडः सुखभूमीधनलाभः ॥ ऐकारया ॥ नानाद्वेषसंतापशो
 कसंनिविष्टेभितिलाभः ॥ ओकारया ॥ दक्षशत्रुनाशयाकोज्यासिद्धपुत्रधनलाभः ॥
 औकारया ॥ चिंतनासराजभयवधनजुयु ॥ अंकारया ॥ सर्वकार्यसिद्धधनपुत्रकेत्याहे
 वुवस्त्रुत्रनानालाभः ॥ अकारया ॥ मन्त्रभाषकज्यासिद्धसर्वत्रराभजुयु ॥
 ककारया ॥ धनवस्त्रलासाफांगासर्वलाभः ॥ खकारया ॥ धनपुत्रनाशवंधनरेवायमालिङ्ग
 शत्रुवृद्धिकार्यनाशः ॥ गकारया ॥ याकोकार्यसिद्धभिडस्वयंयुधनलाभः ॥

फरंगीन्दुरत्न वज्राचार्य

घकारया॥आपायानाश्या.निरुद्ध.पुत्र.परिवारव.कलह॥ ॥ङकारया॥शोक.दुःख
 रोग.मृत्युभय.धननाश॥ ॥चकारया॥धनराभ.रोगनाश.सुख.शरीरपोष॥ ॥ह
 कारया॥नय.निय.तेने.लासा.फागा.तिसा.वस्त्र.राभ.याकोकार्यसिद्धि॥ ॥जकारया
 भशुभ.थवधिधि.इष्टमित्रव.नित्यंकलह॥ ॥रुकारया॥जस.सुख.भाग्य.तापाले
 न.धनलाभ॥ ॥ञकारया॥रोगीयारोगवधजुय.खया.मियाभय.वधन.कलह॥
 ॥ ॥टकारया॥शरीर.अशोभा.विना.कुनातयु.नानादुःख.कार्यनिरुद्ध॥ ॥
 ठकारया॥तापालेधनलाभ.स्त्री.पुत्रलाभ.मिसानडे.नसा.पुरुषलाभ॥ ॥डकारया
 ॥ताकालनंकार्यसिद्ध.रोगनाश.शरीर.वलायि॥ ॥ढकारया॥अनेगचिंता.विदेश

वनेमालिव.कार्यनाश॥ ॥णकारया॥धन.अन्नलाभ.सर्वकार्यसिद्धि॥ ॥तकार
 या॥उगसेजुयमालिव.तीर्थवनेमन.नित्य.अन्नउहावयि॥ ॥थकारया॥धनसि
 द्धिदयु.भिंशुखडे.नेदयु.निर्गमी.सुख.राजमान्य॥ ॥दकारया॥धन.संपत्ति.कन्या
 लाभ.मंगल॥ ॥धकारया॥धनसंपत्ति.सुख.लाभ.मंगलजुय॥ ॥नकारया॥
 अग्निभय.चौरभय.नित्यकलह.रोगी॥ ॥पकारया॥याप.वधयजुय.धर्मयानाशुभंग
 वादविवाद.विद्यु॥ ॥फकारया॥समस्तसिद्ध.संपत्तिराभ.ययाशुनयदयुनाभदयु॥ ॥
 वकारया॥रोगभय.धननाश॥ ॥भकारया॥नयदयु.धनअन्नभाग्य.वृद्धिदयु
 तवध.मान्य॥ ॥मकारया॥मृत्युभय.धननाश.सभिंसनुषयासेवायायमालि.का

र्यविद्या ॥ ॥ यकारया ॥ जस धन अंन सा मेस पुत्र पत्नापतिं लाभ दय ॥ ॥ रकार
 या ॥ धन पसु लाभ भिन वस्तु नय दय या को कार्य सिद्ध ॥ ॥ लकारया ॥ आरोग्य ॥
 जस लाभ दक्ष ज्ञास नायक लाभ ॥ ॥ वकारया ॥ नित्यं जस लाभ संतान वृद्धि सा
 भिन यदयु कार्य लाभ ॥ ॥ शकारया ॥ जस लाभ ऐश्वर्य राजान मान्य यायु धन दुहा वयु
 ॥ ॥ षकारया ॥ धन नाश हांनि स्थान भुष्ट जुयि ॥ ॥ शकारया ॥ सर्व कार्य सिद्ध धन
 लाभ रोग नाश ॥ ॥ हकारया ॥ कार्य सिद्ध धन धर्म वृद्धि ॥ ॥ क्षकारया ॥ धन नाश
 शत्रुन पीडा यायु अतिम भिन ॥ ॥ इति स्वर वर्ण नाम अक्षर पञ्च समाप्त ॥ ॥ ॥

वु	उ	व	भौमादित्यगतं हरं ॥ तापाक	सूर्य वंड	हरस्पति सत्वगुणग
रु	आ	मं	उधमं कसमीपती ॥ सपतिक	उध भुक्त	रजोगुणग
क	न	वा	मृगुणगुरुचंडा ॥ ऊवनेस	शनि राऊ	मंगल केतु तमोगुणग
			नहस्पति शनि राऊ ॥ तापाता मखे		

१ ज्ञांस्वःत्रो काय नमः स्वाहा ॥ अथ मध्याह्ना वाहयेत् ॥ ॐ ध्याक्षि ३ क्षक्ष ३ हूं ३ क्षीः फट् स्वाहा ॥
 र ॐ इष्ट देवताय नमः स्वाहा ॥ ॐ भुलोकाय नमः ॥ ॐ भुवलोकाय नमः ॥ ॐ ज्ञांलोकाय नमः स्वाहा ॥ ॐ क्षी ३ धना श्रीव
 र्द्धनाय नमः स्वाहा ॥ धा २१ सलांजोपे ॥ ॐ एं क्षी ३ स्फे ॥ ॐ क्षी ३ कौं कौमारी रो वि मुर्त आग रु २ अस्मिं मण्डले सानिध्यां कु
 रु कुरु रूफ स्वाहा ॥ ॐ अक चटन पय शवाष्टमातृका ॥ मूर्तये आग रु २ रूफ स्वाहा ॥ ॐ अक चटन पय शवा
 हा ॥ धा २१ सलांजोपे ॥ इति श्री सुगीव विरचितं अष्टवर्ग साधनं समाप्तं ॥ ॐ श्री ३ गुरु मूर्तये नमः ॥ ॐ कारिकरा
 नी राम करि स्वाहा ॥ धा ७ कि पूय अष्टवर्गस ॥ ॥ अथ मंत्र ॥ ध्वज सोमाय स्वाहा ॥ धूम संगाय स्वाहा
 सिंह वृषाय स्वाहा ॥ स्वान आदित्याय स्वाहा ॥ वृष वृहस्पते स्वाहा ॥ खर शनि श्वराय स्वाहा ॥ ॐ गज भुका
 य स्वाहा ॥ ॐ धांक्ष राऊ केतुभ्यः स्वाहा ॥ ॐ अष्ट गृहेभ्यः सत्यः अष्ट मानकाभ्यः नमः अष्ट कुलनागेभ्यः सत्य
 सत्यं ३ नमः स्वाहा ॥ धा ७ रुजपे मंत्रः ॥ ॥

१३ नमः श्री वज्रसूक्ताय ॥ ॥ मथ अष्टवर्गस्य दृष्टफल ॥ ॥ अजस्थाने अजं दृष्ट्वा राजचिंताधनादिकं
 दृष्टफल ॥ १ ॥ अजस्थाने स्थिते धूम धानुचिंतातुराभकं ॥ २ ॥ अजस्थाने स्थिते सिंह धनराभादिकमुवा ॥ ३ ॥
 अजस्थाने स्थिते स्वानं सिंहचिंतातुराभकं ॥ ४ ॥ अजस्थाने वृषं दृष्ट्वा स्थानचिंतातुराभकं ॥
 ५ ॥ अजस्थाने खरं दृष्ट्वा उः खलेशानिकं भवेत् ॥ ६ ॥ अजस्थाने गजं दृष्ट्वा विजयानि सनागमिः
 स्थानचिंतातुराभकं ॥ ७ ॥ अजस्थाने तथा धूम धानुचिंताधनक्षय ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ धूमस्थाने
 अजं दृष्ट्वा पूर्व उः खलेशानिकं भवेत् ॥ १ ॥ धूमधूमं ततो दृष्ट्वा कलिः उः खलेशानिकं भवेत् ॥ २ ॥ धूमस्थाने स्थिते सिंह
 हेनामं चिंताधनादिकं ॥ ३ ॥ धूमस्थाने स्थिते स्वानं जराभादिकं भवेत् ॥ ४ ॥ धूमस्थाने वृषं दृष्ट्वा रागादिः
 गतस्त्वधनादिकं ॥ ५ ॥ धूमस्थाने खरं दृष्ट्वा विविधधनक्षय ॥ ६ ॥ धूमस्थाने गजं दृष्ट्वा

॥ धूमस्थाने स्थिते धूम धानुचिंताधनक्षय ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ सिंहस्थाने अजं दृष्ट्वा राजाभा नि द
 सेत ॥ १ ॥ सिंहस्थाने स्थिते धूम कन्याप्राप्तिधनजितं ॥ २ ॥ सिंहस्थाने स्थिते सिंह जगाम न्युधनजितं ॥ ३ ॥
 सिंहस्थाने स्थिते स्वानं स्त्रीचिंतातुराभकं ॥ ४ ॥ सिंहस्थाने वृषं दृष्ट्वा गृहक्षत्रादिराभकं ॥ ५ ॥ सिंह
 स्थाने खरं दृष्ट्वा ग्रामराभस्वामिरेव च ॥ ६ ॥ सिंहस्थाने गजं दृष्ट्वा आरोग्यां च मुखाधिकं ॥ ७ ॥ सिंह
 स्थाने स्थितं धूम धानुचिंताधनक्षय ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ स्वानस्थाने अजं दृष्ट्वा स्थानचिंताधनादिकं
 ॥ १ ॥ स्वानस्थाने स्थिते धूम ॥ २ ॥ स्वानस्थाने स्थिते सिंह काजसिद्धिभविष्यति ॥ ३ ॥
 स्वानस्थाने स्थिते स्वानं धनराभभविष्यति ॥ ४ ॥ स्वानस्थाने वृषं दृष्ट्वा रोगी रोगाद्यमुंचने ॥ ५ ॥
 स्वानस्थाने खरं दृष्ट्वा कलहं च भगं भवेत् ॥ ६ ॥ स्वानस्थाने गजं दृष्ट्वा पुत्रराज्यसमागत ॥ ७ ॥ स्व

तथा नेस्त्रिने धांक्ष पीडा स्या वलनाशनं ॥ ८ ॥ ॐ ॥ वृषथाने ध्वजदंष्ट्रा राजपूजा सुखलिकं ॥ १ ॥
 वृषथाने स्त्रिने धूमं राजपूजा लिकं भवेत् ॥ २ ॥ वृषथाने स्त्रिने सिंह शोभा गंधने धनो लिकं ॥ ३ ॥
 वृषथाने स्त्रिने स्नान वरस्त्री काम इत्यपि ॥ ४ ॥ वृषस्थाने वृषं दंष्ट्रा किर्त्ति तुष्टि सुखान्वितं ॥ ५ ॥
 वृषथाने वरं दंष्ट्रा महानामान्विकं भवेत् ॥ ६ ॥ वृषथाने गजदंष्ट्रा स्त्री गजाणि समागम
 ७ ॥ वृषथाने धांक्ष दंष्ट्रा स्नानमारे समागम ॥ ८ ॥ ॐ ॥ वरस्थाने ध्वजं दंष्ट्रा गौ गशो का
 चितं भवेत् ॥ १ ॥ वरथाने स्त्रिने धूम तस्का गणि भर्त्ति भवेत् ॥ २ ॥ वरस्थाने स्त्रिने सिंह पूजा
 श्री वीजयान्वितं ॥ ३ ॥ वरस्थाने स्त्रिने स्नान संताप धननाशनं ॥ ४ ॥ वरस्थाने धांक्ष पीडा भि
 निदिशेत् ॥ ५ ॥ वरथाने वरं दंष्ट्रा स्वक तां किं नित्यया ॥ ६ ॥ वरथाने गजं दंष्ट्रा सुख पुत्रा दि
 कं भवेत् ॥ ७ ॥ वरस्थाने स्त्रिने धांक्ष कलह व्याधितं भवेत् ॥ ८ ॥ ॐ ॥ गजस्थाने ध्वजं

गज दंष्ट्रा जरा सुखान्वितं ॥ १ ॥ गजथाने स्त्रिने धूम धन धान्य समागम ॥ २ ॥ गजथाने स्त्रिने सिंह जया
 सिद्धि समागम ॥ ३ ॥ गजथाने स्त्रिने स्नान मारेण सुख संपदा ॥ ४ ॥ गजथाने वृषं दंष्ट्रा राजमान्य
 धनान्वितं ॥ ५ ॥ गजस्थाने दंष्ट्रा पूर्व उखंत नो सुखं ॥ ६ ॥ गजस्थाने गजं दंष्ट्रा स्त्री जरा श्री सुखान्वितं ॥ ७
 ॥ गजथाने स्त्रिने धांक्ष धन धान्य समागम ॥ ८ ॥ ॐ ॥ धांक्षस्थाने ध्वजं दंष्ट्रा कार्यनाशो भविष्यति ॥ १
 ॥ धांक्षथाने स्त्रिने धूम कलिं कृत्वा गति शक्ति ॥ २ ॥ धांक्षथाने स्त्रिने सिंह विग्रह धूम मेव च ॥ ३ ॥ धांक्ष
 थाने स्त्रिने स्नान गृह भंग गया लिकं ॥ ४ ॥ धांक्षथाने वृषं दंष्ट्रा थाने भंग भया न्विकं ॥ ५ ॥ धांक्षस्थाने व
 रं दंष्ट्रा धर्म नाश जतर्जरा ॥ ६ ॥ धांक्षथाने गजं दंष्ट्रा धन किर्त्ति दि कं भवेत् ॥ ७ ॥ धांक्षथाने स्त्रिने धांक्ष
 विदेरागमनान्वितं ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इति अष्टवर्गस्य दंष्ट्रा फलं समाप्तं ॥ ॐ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८
५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४
७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२
८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०